REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

भारतीय इतिहास में काल विभाजन

आशुतोष शुक्ल[1] , डॉ. आशा रानी[2]
[1]शोध छात्र , इतिहास विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला (पी.जी.) कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर , इतिहास विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला (पी.जी.) कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.)

काल विभाजन न केवल भारत के इतिहास बल्कि विश्व के इतिहास को भी जानने, समझने, लिखने और अवबोधन का एक वैज्ञानिक तरीका है। काल विभाजन के बगैर इतिहास, इतिहास नहीं होता है। पुराणों में अनेक कल्पों, युगो, आदि का उल्लेख मिलता है और हर युग अपनी अलग महत्ता के साथ, अपना विशेष स्थान बनाए रखे। मसलन, वैदिक धर्म के चार युग कृत्र,त्रेता,द्वापर, कलि है। प्रत्येक युग अपने पिछले युग से नैतिक मानदण्डों और सामाजिक समरसता में प्रदूषित होता जाता है। हर सभ्यता के तृणमूल में सामाजिक सद्भाव छुपा रहता है। सामाजिक विभाजन न तो क्लिष्ट होता है न ही दुरूह। लेकिन जैसे–जैसे सभ्यता अपने पुराने काल को छोड़कर नए कलेवर में ढलती जाती है वह अत्यधिक जटिल, परस्पर प्रतिस्पर्धी, नैतिक मानदण्डों मे विघटित और स्वार्थपरक होती जाती है। यानी काल विभाजन के माध्यम से हम सभ्यता के तृणमूल से चरम बिंदु तक की यात्रा को समझकर,अतीत के माध्यम से अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। काल विभाजन इतिहास को क्रमिक एवं वैज्ञानिक बनाता है ताकि हम इतिहास को सरल रूप में समझ सकें।

भारत के इतिहास का काल विभाजन मॉडल अनेक आधारों पर खड़ा है जो इतिहाकार की विचारधारा और सिद्धान्त विशेष के प्रति उनके झुकाव को प्रदर्शित करता है। इतिहास का भारतीय काल विभाजन उपनिवेशी इतिहासकार जेम्स मिल के कारण चर्चा में आया। दरअसल जेम्स मिल का काल विभाजन का मॉडल अपने समय और परिस्थितियों से प्रभावित था। जेम्स मिल का जन्म 6 अप्रैल 1773 को स्कॉटलैण्ड में हुआ था। उनकी मृत्यु 23 जून 1836 को 63 वर्ष की आयु में लंदन में हुई थी। जेम्स मिल विशेष रूप से तीन स्कूल से प्रभावित था। सर्वप्रथम और सर्वाधिक प्रभाव उन पर उपयोगितावादी चिंतन का था। उपयोगितावाद एक ऐसी विचारधारा है जो अधिकतम लोगों के अधिकतम् सुख में विश्वास रखती है। दूसरा यह विचारधारा मानती थी कि श्वेत जातियां लोगों के सुख में विश्वास करती है। और लोगों की भलाई करने के लिए ही अग्रेजों ने उपनिवेश की जनता के शासन का काम सम्भाला है। फूट डालों और राज करों नीति से अलगाव जाहिर करती हुए भी यह विचारधारा जेम्स मिल के माध्यम से भारत का काल विभाजन कुछ इस तरह करती है जिससे साम्प्रदायिक विभाजन की दुर्गंध आती है। जेम्स मिल, महान चिंतक जॉन स्टूअर्ट मिल और बेंथम दोनों से प्रभावित था। जेम्स मिल की किताब 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंण्डिया' में भारतीय इतिहास के काल विभाजन की चर्चा की गयी है। साम्राज्यवादी इतिहासलेखन से सम्बद्ध होकर उपयुक्त किताब जेम्स मिल द्वारा लिखी गयी। इस किताब में मिल ने इतिहास को हिन्दू काल, मुस्लिम काल और

अंग्रेज काल में बॉटा। इस प्रकार धर्म के नाम पर शासकों के शासनकाल को देखा यानी जिस धर्म के शासकों का शासन काल था उसी धर्म के लोगों से सम्बद्ध कर काल विभाजन कर दिया। थॉमस ट्राटमेन के अनुसार 'जेम्स मिल ब्रिटिश भारत के इतिहास में विशेष दिलचस्पी रखते थे, विशेष तौर पर दस अध्यायों में हिन्दू सम्मिलन पर निबंध एकमात्र महत्वपूर्ण स्त्रोत है जो ब्रिटिश इण्डोफोबिया से संबद्ध है तथा प्राच्यवाद के लिए सक्रिय स्थिति पैदा करता है।' [1]

दरअसल जेम्स मिल हिन्दू काल एवं मुस्लिम काल विभाजन जैसे शब्दों का प्रयोग कर प्रकारान्तर से अंग्रेजों की फूट डालों और राज करों का समर्थन ही कर रहे थे। इस किताब में जेम्स मिल ने इतिहास, चरित्र,

धर्म, साहित्य, कला ओर भारतीय कानूनों का बखूबी जिक्र किया है। उन्होने भारतीय जलवायु का उपर्युक्त सभी विषयों पर प्रभाव का मूल्यांकन भी भली–भॉति अपनी किताब में करने का किया प्रयास किया है।
मेरिट जॉन के अनुसार जेम्स मिल का मानना है 'कि भारत के बारे अत्यधिक पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इंग्लैण्ड के समीप रहकर भी उतना जान नहीं सकता अगर उसने अपने ऑख और कान खुले नहीं रखे हैं।' [2]

जेम्स मिल ने अपनी भूमिका में इस बात को स्पष्ट किया कि उनका कार्य इतिहास के साथ न्याय करना एवं दुरूह कार्य करना है। उन्होने हिन्दू संस्कृति तथा उसके पिछड़ेपन पर प्रहार किया है और उसे कूप मंडूक प्रकार से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से अंधविश्वास, उपेक्षा और गलत व्यवहार का वर्णन किया है जो महिलाओं के साथ होता रहा है। जेम्स मिल ने जिस समय यह काल विभाजन पेश किया उस समय हिन्दू–मुस्लिम एकता काफी चरम पर थी। अंग्रेज चाहते कि किसी बड़े विद्रोह के बदले वह इस एकता को तोड़ सकें। जेम्स मिल की बौद्धिकता का अंग्रेजो ने एक बेहतर प्रयोग किया। उन्होने काल विभाजन के माध्यम से यह भ्रम फैलाया कि अंग्रेजो का शासन अधिकतम लोगो के अधिकतम सुख के लिए हो रहा है। वह भारत के समाज को सभ्य बनाने आए हैं। और इस विचारधारा का वे 'श्वेत का भार' नाम से प्रमाणित और प्रसारित करते रहे।

लेखक मिल द्वारा जीवन के आखिरी सत्रह वर्ष के दौरान लिखे गए इतिहास में भारत में अंग्रेजी शासन में अत्यधिक परिवर्तन हुए। मिल कभी भारत नहीं आए तथा केवल डाक्यूमेट्री अंतर्वस्तुओं पर विश्वास करके और अभिलेखीय साक्ष्य के आधार पर उन्होने अपना कार्य पूरा किया। मिल का भारत के बारे में उपर्युक्त विचार अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन जी के हैं। [3]

जेम्स मिल ने अपने आप में एक दार्शनिक उग्रता स्थापित कर दी। मिल का लेख शासन और उसके प्रभाव को इंगित करता था। वह स्वतंतत्रा, समानता और बंधुत्व पर आधारित फ्रांसीसी क्रांति से अंत्यन्त प्रभावित था, इसी दबाव से रिफार्म विधेयक लाया गया।

1 ट्राटमेन थॅमस आर0, आर्यन एंड ब्रिटिश इंण्डिया, थोड़ा प्रेस, पृष्ठ संख्या–117 आई.एस.बी. एन–81–902272–1–1.
2 मेरिट जॉन, द अदर एम्पायरः मेट्रोपोलिस, इण्डिया एण्ड प्रोंग्रेसइन कोलोनियल इमेजिनेशन, मेनचेस्टर यूनवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ–133, आई.एसबीएन. 978–0–7190–6018–2.
3 अमर्त्य सेन जी, द आर्ग्मनटेटिव इण्डियन्स

मिल ने काल विभाजन में हिन्दुओं को नेटिव कहा जबकि मुस्लिमों को विदेशी कहा जबकि ऐसा नहीं था। दरअसल जो भी आक्रमणकारी भारत में आए और भारत को विजित किया वो सब के सब भारत के वासी होकर रह गए लेकिन अंग्रेजों ने भारत पर शासन तो किया लेकिन इनका मातृ देश इंग्लैण्ड ही रहा तथा भारत को उपनिवेश बना दिया भारत में कमाई के माध्यम से जो भी लाभ होता था उसे इंग्लैण्ड भेज दिया जाता था। जबकि मध्यकालीन शासकों ने भारत का धन भारत में खर्च किया जिससे लोगो को रोजगार मिला। तथा उससे भारत की आम जनता का भला हुआ।

एक अन्य प्रकार का काल विभाजन जो आम तौर पर भारत के स्कूल की किताबों में मिलता है वह है, प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत का इतिहास। लेकिन इस प्रकार के काल विभाजन में अनेक अनिश्चितताएं प्रकट होती हैं। उदाहरण के लिए प्राचीन भारत का अन्त और मध्य कालीन भारत की शुरूआत। फिर भी तीन वर्षीय डिग्री प्रोगाम में इसको लगभग सर्वसम्मति से एक आधार बनाया गया है। इस प्रकार का काल विभाजन एक सामाजिक संदेश देता है और एक व्यापक प्रभाव शोध पर डालता है। डी0डी0 कोशाम्बी का मत सोवियत भारतविद डी.ए. सुलेकिन की बात को आगे बढ़ाते हुए कहते है कि –

'भारत केवल एक गणितीय बिंदु नहीं अपितु वृहद देश है। एक उपमहाद्वीप जाहां प्राकृतिक वैविध्य है– साथ ही भाषा एवं इतिहास का विकास सम्मिलित है। सदियो बाद सिंधु घाटी में सामाजिक संबंधों का विकास हुआ जो बंगाल, मालाबार सहित पूरे भारत में दृढ़ता से व्याप्त है। अतः भारत के इतिहास का काल विभाजन करना, विशेषकर पूरे का एक साथ, लगभग असंभव है।' [4]

इस प्रकार उपर्युक्त सोवियत विद्वान का मानना है कि भारतीय इतिहास का काल विभाजन करना संभव नहीं है। क्योकि अलग–अलग क्षेत्रों का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास अलग–अलग हुआ है और पूरे भारतीय क्षेत्र को एक सांचे में ढालना संभव नही।

इस प्रकार भारत के इतिहास के समुचित लेखन तथा काल विभाजन को तभी पूर्ण माना जा सकता है जब स्थानीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समीकरणों को भी शामिल किया जाय। रोमिला थापर का मानना है कि 'भारत के परिधीय क्षेत्र न्यूक्लियर समूह के रूप में पृथक–पृथक था, जैसे जंगल व कोस्टल एरिया और ग्रामीण क्षेत्र।'

4 डी.डी. कौशाम्बी, ऑन ऐ मार्क्सिस्ट एप्रोच टू इंडियन क्रोनोलोजी, इन कम्बाइंड मेथेड इन इंडोलोजी, एण्ड अदर राइटिंग (चट्टोपाध्याय), पेज–49–50, डी.ए. सुकालिन, 'बेसिक क्योश्चन ऑफ द पीरियडज्ञइजेशन ऑफ द एनशिंएन्ट इंडियन हिस्ट्री, 1954.

उन्होने इन नाभिकीय क्षेत्रों में गंगा घाटी, मालवा, रायचूर दोआब, आध्र तटीय क्षेत्र, सौराष्ट्र, असम का मैदान, उड़ीसा मैदान आदि को माना। यह अपने चरित्र में कृषि अर्थव्यवथा, बंदोबस्त स्तरीकरण, विशेष था। समय के साथ यह नाभिकीय क्षेत्र अलगाववादी ने राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर पर। इनका सामाजिक और धार्मिक ढॉचा भी अलग–अलग था।

इस प्रकार भारत का तीन प्रकार से काल विभाजन अनेक सिद्धान्तों एवं विचारों को मानने वालो ने भी किया है। कार्ल मार्क्स ने 'प्राचीन भारत में एशियाई उत्पादन प्रणाली (एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन) को प्रमुख माना था। [5] इस प्रकार कार्लमार्क्स ने भारत में एशियाई उत्पादन प्रणाली की चर्चा की है। जिसमें सिंचाई के साधनों पर राजाओं या शासको का कब्जा होता है और इस प्रकार वह जनता पर नियंत्रण रखते हे। वह यूरोप की व्यवस्था जहां दासों से कृषिदासो का विकास हुआ उसको एशिया में अस्वीकार करते है। यानी (सेलेवरी टू सर्फडम का विरोध)

उसी प्रकार जब ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहाकार जो उपयोगितावाद, उदारवाद आदि विचारों से भी प्रेरित थे, शासको के धर्म के आधार पर काल विभाजन किया, जेम्स मिल जिनकी चर्चा पहले हो चुकी है। उन्होने प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत को 'हिन्दू, मुस्लिम और ब्रिटिश काल में बॉटा। मिल ने सर विलियम जोन्स और मैक्समूलर के संस्कृति एवं संस्कृत से संबंधित अनुवादों को आधार माना इन लोगों ने भी संस्कृत से संबंधित ग्रंथों और शासकों को हिन्दूकाल से जोड़ा था इन उपयोगितावादियों ने यूरोपियन्स से परे जाकर इतिहास का विश्लेषण किया है। उनका मानना था कि बर्बर मुस्लिम आक्रमणकारियो ने न केवल यूरोप में तबाही मचायी बल्कि भारत में भी मुस्लिम आक्रांता आए। जो मुस्लिम जनजातियां तथा मुस्लिम अरब थे। अंग्रेज इतिहासकार इसे 'अंध युग' कहते हें। अंग्रेजी शासन ने अंधयुग से मुक्ति दिलायी तथा आधुनिक युग में प्रवेश कराया। यह काल विभाजन यूरोपीय इतिहास लेखन और धार्मिक प्रभाव जैसे जुड़वा प्रभावो से ओत प्रोत है इसीलिए यह काल विभाजन साम्प्रदायिक हो जाता है। जो सकारात्मक प्राचीन हिन्दू इतिहास, नकारात्मक मध्यकालीन मुस्लिम इतिहास और आधुनिक ब्रिटिश काल को अवधारित करता है। यह विभाजन कुछ इस प्रकार का है कि हिन्दू काल 1190 ईस्वी तक चलता है जो मुस्लिम शासको द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना से दूसरे युग में प्रवेश करता है। और यह मुस्लिम काल प्लासी के युद्ध के साथ समाप्त होता है। जहॉ ब्रिटिश इतिहास आरंभ होता है। धार्मिक आधार पर काल विभाजन करने का ब्रिटिश इतिहासकारों का तर्क यह है भारत का समाज एक जड़ समाज है और इसका परिवर्तन या सुभेद्यता बहुत कम है। इसमें जो भी परिवर्तन हुआ है वह केवल शासकों के स्तर पर हुआ है। लेकिन यहाँ अनेक तत्व उभर कर भी आते है। जैसे, सूदूर दक्षिण में कभी भी स्थायी मुस्लिम शासन नहीं देखा गया, राजस्थान में युगो– युगों तक हिन्दु शासकों का शासन रहा। मध्य और उत्तर पूर्व भारत में इस्लामी शासक या इस्लामी तत्व बहुत कम दिखायी पड़ते है। इन लेखकों का यह भी विचार है कि भारत में मुस्लिम शासकों के शासन काल के दौरान संस्कृति धॅस गयी। उदाहरण के लिए, प्राचीन हिन्दू भारत में स्त्रियों को अनेक अधिकार थे। 5 कार्ल मार्क्स, ए कोट्रीब्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ पालिटिकल इकोनॉमी पृष्ठ–21

वह आराम से कहीं घूम सकती थी, सम्पत्ति की स्वामी हो सकती थी, लेकिन मुस्लिम बर्बरों के आगमन से, हिन्दू लड़कियों का अपहरण होने लगा अतः वे पर्दाप्रथा में रहने लगीं जिस स्त्री का पति गुजर जाता वह

सती हो जाती। शीलभंग के भय से स्त्रियों का बाल विवाह होने लगा। बी.डी. महाजन ने भारत के इतिहास में लिखा है कि '' बर्बर आक्रमण कारियों के भय से जाति प्रथा और मजबूत होती गयी।,[6] '' इस प्रकार हिन्दू सकारात्मक काल का संकेत ब्रिटिश इतिहासकार देते है।

आजकल के इतिहास अध्ययन ने तीन प्रकार के विभाजन आम प्रचलन में हो गए है। जहां 1190 ईस्वी से मुस्लिम शासन द्वारा मध्यकालीन भारत के इतिहास का प्रारंभ माना जाता है। 650 ईस्वी में हर्षवर्धन की मृत्यु को कट ऑफ बिंदु माना जाता है। और यह कहा जाता है कि एक वृहद साम्राज्य का अंत हुआ तथा सामंतवाद का उदय हुआ इस काल विभाजन के स्त्रोतो के आधार पर भी हिन्दु, मुस्लिम आदि का विभाजन दिखाया जाता है। मसलन अगर किसी को प्राचीन भारत का अध्ययन करना है तो पुरातत्व जैसे हिन्दू राजाओं के सिक्के, अभिलेख, संस्कृत पुस्तके एवं लेख आदि। मध्यकालीन इतिहास अध्ययन के लिए फारसी ग्रंथो का साक्ष्य तथा आधुनिक इतिहास लेखन के लिए ब्रिटिश भारत के अंग्रेजी में छपे अभिलेख, पुस्तके, सामग्री आदि। 'पूर्व मध्यकालीन भारत' नामक एक नए विभाजन से प्राचीन भारत का अंत और मध्यकालीन भारत की शुरूआत में आसानी होती है। चूकि इसमें अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी अभिलेख मिलते हे। तथा फारसी आदि के मिले जुले लेख भी मिल जाते है। यहां तक कि कभी–कभी इस साम्प्रदायिक विभाजन का असर यह पड़ता है कि हिन्दू धर्म को मानने वाले शोधार्थी प्राचीन भारत पर शोध करना पसंद करते हैं। और मुस्लिम शोधार्थी मध्यकालीन भारत पर शोध करना पसंद करते है। इसकी बड़ी वजह कहीं न कहीं संस्कृत ओर फारसी भाषाओं की परंपरा, ज्ञान और दिलचस्पी है।इस पार्थक्य की नीति का परिणाम है कि अध्ययन का तरीका अलग–अलग खेमों में बंटा है। अतः विभिन्न युगों के स्त्रोतों की भिन्नता इसमें अजीब सी समस्या पैदा करती है। जैसे ब्राहम्ण भूमि अनुदान में सम्बन्धित बातें, मुस्लिम काल में जमीदारी तथा अग्रेंज काल में स्थायी बंदोबस्त। यह सब पुरातत्व पर निर्भर हो लेकिन पुरातत्वविद स्त्रोत अपने आप में पूर्ण नहीं है उनके आधार पर हम सिर्फ अनुमान लगा सकते है। और नाही धर्म के आधार पर चीजों को हिन्दू प्रतीक या मुस्लिम मध्यकालीन में रख सकते है। जैसे विजयनगर पूर्व मध्यकालीन भाग में आता है लेकिन विजयनगर साम्राज्य में चूंकि मुस्लिम शासक नहीं बल्कि हिन्दू राजा थे अतः उन्हीं हिन्दू शासकों के आधार पर अनेक इतिहासकार प्राचीन भारत के इतिहास में रखते है। जॉन एम.फिटस, जॉर्ज माइकल तथा डीवी देवराय ने 'विजय नगर को प्राचीन भारत में माना है।[7] इसके साथ ही इक्तदार आलम खान ने मुगल कालीन सराय,रोड, पुलो का सर्वेक्षण कर उसे भारतीय तस्वीर का उदाहरण माना, जो धार्मिक या विदेशी को काटता है और भारतवासियों के आपसी सामंजस्य का प्रतीक है। एक पूर्वाग्रह देखने को और मिलता है कि विश्व विद्यालय के विभागो, विशेषकर इतिहास के एक विभाग का नामकरण' प्राचीन भारतीय इतिहास व पुरातत्व विभाग' देखने को मिलता हे। अब प्रश्न यह है कि क्या पुरातत्व केवल प्राचीन भारत से सम्बद्ध है।

6 बी.डी.महाजन, भारत का इतिहास, पेज न.–79

7 जॉन एम. फ्रिट्स, जार्ज माइकल, डीवी देवराय, विजयनगर रिसर्च प्रोजेक्ट मोनोग्राफ, (5भाग)

अब प्रश्न यह उठता है कि उपर्युक्त बातों से हमने कितना सीखा? क्या हमारे इतिहास के काल विभाजन में कोई परिवर्तन आया? क्या हम साम्प्रदायिक काल विभाजन की मान्यता को ठुकराकर वैज्ञानिक ऐतिहासिक काल विभाजन की ओर उन्मुख हो सके? निश्चित रूप से कालविभाजन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। या यूं कहें कि महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन आया है। समाज को इतिहास के काल विभाजन में बॉटना संभव नहीं है बस उसके गुणात्मक परिवर्तन को महसूस किया जा सकता है। अगर हम भारतीय इतिहास को धर्मवंश के आधार पर बॉटेगें तो हम एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन और सामाजिक स्तरीकरण व परिवर्तन को उपेक्षित कर देगें। डी.डी. कोशाम्बी ने भारतीय इतिहासकारों के लिए कहा कि 'इतिहावृत्त के परिवर्तन में उत्पादन प्रणाली एवं उत्पादन के साधनों पर अधिकार की चेष्टा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।'[8] कार्ल मार्क्स के चिंतन से प्रभावित होकर मार्क्सवादी इतिहासकार उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण को लेकर हुए परिवर्तन से काल विभाजन को मान्यता देते हुए उनका मानना है कि सबसे पहले आर्थिक आधार को लेकर परिवर्तन प्रारंभ होता है और धीरे–धीरे पूरे क्षेत्र जैसे राजनीतिक, सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों में परिवर्तन लाता जाता है। इसी आधार पर मार्क्सवादी इतिहासकार भारत में परिवर्तन और काल विभाजन को देखते हैं।

भारत के बारे में कार्ल मार्क्स ने लिखा है कि 'सभी नागरिक युद्ध, आक्रमण, क्रांति, विजय, अकाल, अनजाना गठन, द्रुत विध्वसात्मक क्रियाकलाप जो भी हिन्दुस्तान में हुए वह केवल सतही थे उनका प्रभाव गहराई से नहीं पड़ा। यह स्वनियंत्रित एवं परिवर्तित सामाजिक परिवर्तन का समाज लगभग अछूता रहा।' [9] कार्ल

मार्क्स ने इस प्रकार आर्थिक आधार में परिवर्तन हुए बिना अन्य क्षेत्रों में परिवर्तन को नकार दिया। मार्क्स ने इसका तर्क दिया कि जो एशिया की जलवायु थी उसमें कृत्रिम सिचाई के साधनों के द्वारा बड़े पैमाने पर सिंचाई होती थी जिस वजह से कृषि उत्पादन होता था। यह सिचाई छोटे स्तर पर संभव नहीं थी तथा इसे व्यापक पैमाने पर राज्य द्वारा ही उपलब्ध कराया जा सकता था। इस प्रकार निजी रूप से सिचाई साधन उपलब्ध न होने के कारण निजी सम्पत्ति कम थी इसलिए वर्ग विभाजन सम्पत्ति के अभाव में संभव नहीं था अतः सरकार उत्पादन अधिशेष को कर के रूप में वसूल लेती थी। अतः सिचाई के साधनों पर राज्य के नियंत्रण कर की अधिकतम् वसूली के कारण अर्थव्यवस्था गॉवके समुदाय में बंट गयी। और राज्य ने बलूतेदार द्वारा भू–राजस्व वसूल किया। इस प्रकार निजी सम्पत्ति के अभाव तथा सामाजिक वर्गीकरण के अभाव में परिवर्तन बहुत कम हुआ अतः जो भी नए शासक आए उनकी दिलचस्पी अधिक से अधिक भू–राजस्व वसूल करने में रही तथा किसानों ने केवल अधिक करों व राजस्व का विरोध किया तथा किसी भी प्रकार के सामाजिक परिवर्तन से अछूते रहे। इस प्रकार भारत के गॉव परिवर्तन से दूर रहे। कुछ उपनिवेश व कम्युनिस्ट विरोधी लोगों ने भारत और चीन पर शोध किया तथा जब एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन को चीन के सामंती समाज पर लागू किया गया तो पाया

8 डी.डी. कोशाम्बी, द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ एशियट इंण्डिया इन हिस्टारिकल आउटलाइन, पेज–10

9 कार्ल मार्क्स सर्वे फ्राम एक्साइल(इ0डी0फर्न वेथ) पेग्विंन 1973 पृष्ठ– 302,306

गया अगर मार्क्स की बात को सही माने तो कभी भी चीन के सामंती समाज में परिवर्तन न आता तथा चीन विकास की उन सीढियों पर कभी न चढ़ पाता। डी डी कोशाम्बी अपनी किताब में उद्धत करते हैं 'भारत का समाज एक अपरिवर्तन शील समाज रहा है तथा यह केवल बंद ग्रामीण अर्थव्यवस्थ रही है, जो भी परिवर्तन हुए हैं यह बहुत सुस्त रहे हैं। इस पर गौर करने की आवश्यकता है।' [10]

कोशाम्बी ने एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन का विश्लेषण किया है और पाया कि जो भी सिद्धान्त लागू हुए है उनमें से इस सिद्धारून्त का फायदा इस बात में है कि हम इतिहास की ओर मुड़कर वर्ग विभाजन पर गौर कर सकते है। उन्होने इस बात का भी विरोध किया कि एक सुर में आदिम साम्यवाद, गुलामी या दासत्व, सामंतवाद, पूंजीवाद का भारत के लिए जो इस्तेमाल सोवियत भारतीय इतिहास बिंदु डी.ए. सुलेकिन और एस.ए. डांगे ने किया वह सही नहीं है। उन्होने पाया कि परिवर्तन की प्रक्रिया में साम्यवाद से सामंती समाज में परिवर्तन धीरे–धीरे हुआ है।

बी.डी. चट्टोपाध्याय, 'यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि कोशाम्बी ने एक प्रकार से एशियाई उत्पादन प्रणाली का समर्थन कर दिया, जहॉ पहले वे इसके समझे जाने की अपेक्षा करते थे। यह उनका विरोधाभास है।' [11]

उपर्युक्त व्याख्या यह नहीं दिखाती है कि कोशाम्बी के विचारें में धीरे–धीरे परिवर्तन या विकास किस प्रकार आना बल्कि यह दिखाती है भारत का इतिहास एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है कोशाम्बी के अलावा एक अन्य भारतीय मार्क्सवादी इतिहासकार इरफान हबीब की चर्चा यहॉ उपयुक्त है। इरफान हबीब ने एक पूरा सर्वेक्षण प्रस्तुत किया जो पूर्व–उपनिवेशवाद भारतीय समाज से संबंधित थी। यह सर्वेक्षण उन्होने 1965 और 1982 के दो पत्रो द्वारा प्रस्तुति किया। इरफान हबीब का मानना था कि प्रारम्भ होता है जब गरीब और दलित तथा अमीर किसान पृथक–पृथक हो जोते है। तकनीकी रूप से थोड़ा परिवर्तन भी दिखायी देता है इस समय गॉव की अर्थव्यवथा जमीदारों के प्रभाव में आने लगी। तथा प्रभावशाली जमीदारों ने ग्रामीण अथव्यवस्था को प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया। जो भी भूमिहीन दलित एवं मजदूर थे वे राजस्व वसूल करने वालों तथा जमीन पर मालिकाना हक रखने वालों के मध्यवर्ती का काम करते थे। इरफान हबीब ने मध्यकाल का पूर्व लक्षण इसे माना है। इरफान हबीब जी का यह भी मानना है कि धीरे–धीरे भूमि अनुदानो, उन पर कब्जे आदि की भूमिका को जोड़ सकते है। रामशरण शर्मा जी ने पूर्व मध्यकाल की शुरूआत के लिए भू–अनुदान को महत्वपूर्ण माना है उनका मानना है कि आंध्र–सातवाहन काल में भू–अनुदान दिये जाने लगे प्रारंभ में बौद्धों और ब्राहम्णों, श्रमणों आदि को भू–दान दिए गए ताकि कृषि उत्पादन बढ़े, जंगलों को साफ किया जा सके। लेकिन धीरे–धीरे उन्हें भू–अनुदान के राजस्व की छूट मिल गयी। इन्हें 'अग्रहार' व 'ब्रहादेय' नाम दिया गया। अग्रहार ऐसे

भूअनुदान थे जो केवल ब्रहम्णों को मिलते थे जबकि ब्रहदेय ब्राहम्णों के साथ–साथ अन्न लोगों को भी मिलते थे। गुप्त काल में भूमि अनुदानों की बाढ़–सी आ गयी तथ लगभग हर गॉव के आस–पास

10डी.डी.कोशाम्बी द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ एनशिष्ट इंडिया इन हिस्टारिकल आउटलाइन, लंदन, पृष्ठ 20

11बी.डी. चट्टोपाध्याय, इंट्रोडक्शन टू डी.डी. कोशाम्बी, पृष्ठ– 28–29

भूमि अनुदान दिये जाने लगे। गुप्त काल में भू–दान प्राप्तकर्ता को राजस्व वसूलने का अधिकार मिली गया जिससे भू–दान प्राप्तकर्ता राजस्व वसूलता ओर अपने काम की रखकर बाकी का राजस्व सराकरी खजाने में जमा करता जाता था। गुप्तोत्तर काल में यह दान देने की परंपरा बाढ़ की तरह फैल गयी तथा दान देने वालों में सामंत तथा उपसामंत भी शामिल हो गये। इस काल में हर्षवर्धन जैसे शासकों ने भू–दान में अकूत सम्पत्तियां दी। जिससे दान प्राप्तकर्ता अमीर हो गया। अब दान प्राप्तकर्ता को बहुत सारे अधिकार भी मिल गए जो उनको राज्य की तरफ से सुरक्षाकी गांरटी थें। अब जिन्हें भी भू–अनुदान दिया जाता था उसके साथ उस क्षेत्र में कुछ न्यायिक अधिकार भी दे दिए गए। जैसे चोरी करने का दण्ड आदि। वही दक्षिण भारत में अग्रहार तथा ब्रहदेय भू– अनुदान बॉटे गये जिससे उन्हें कई गॉवों पर प्रशासन करने का अधिकार मिल गया। वह कई समितियों के माध्यम से शासन कार्य करती थी। समितियों तथा स्थानीय प्रशासन चोल काल में विशेष तौर पर दिखायी देती। भू–अनुदान के माध्यम से सामंतवाद का उदय होता है। गुप्तों द्वारा अनेक उपाधियों जैसे महाराजाधिराज, परम भट्टारक आदि से प्रकट होता है कि राजा के नीचे पायदान पर अनेक उपराजा है जबकि केन्द्रीकृत मौर्य साम्राज्य में ऐसे लक्षण दिखायी नहीं देते हैं। यानी गुप्त काल तक आते–आते विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति काफी बढ़ गयी थी। यानी राजा के नीचे उपराजा, सामंत के नीचे उपसामंत जैसे वर्गीकरण तैयार हो गए थे। इस प्रकार भूमि–अनुदान की प्रथा से सामंतवाद की जमीन तैयार हो गयी तथा यह जमीन सामंतवाद के रूप में भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व तथा स्त्रियों को सम्पत्ति समझने से संबंधित है। जो मध्यकाल की शुरूआत का एक प्रमुख विषय माना जाता है। जो सामाजिक पिछड़ेपन और जड़ता का प्रतीक भी है, और इसी आधार पर जबकि भूमि और स्त्री व्यक्तिगत सम्पत्ति बन गयी तथा स्त्री की मृत्यु तक साथ देने की परंपरा चल पड़ी यानी सती प्रथा। इस प्रकार मध्यकाल का प्रारंभ माना जाता है। यहॉ यह स्पष्ट है कि केवल शासकों के धर्म के आधार पर काल विभाजन को ठुकराया गया है। क्योंकि मार्क्सवादी इतिहासकारों ने समाज के मूलभूत परिवर्तनों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। वह आर्थिक सामाजिक परिवर्तन जिसके आधार पर कोई काल मध्यकाल कहा जाता है। या नहीं कहा जा सकता है।

अगर हम एक अन्य आधार यानी अर्थवादी काल विभाजन की ओर ध्यान दें तो स्पष्ट है कि डी.ए. सुलेकिन उन प्रथम विचारकों में से एक हैं जिन्होने अर्थवादी संकल्पना के आधार पर काल विभाजन को देखा उनका मानना है कि प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्व इस बात में है कि उन काल में आदिम साम्यवाद कभी भी घुला मिला पूरी तरह नहीं था। अतः इस सिस्टम के बचे रहने और टिके रहने विशेष्कर दासत्व की सामाजिक प्रेरणा के लिए आदिम संस्था का घुला मिला होना जरूरी है। किसी भी वर्ग का वर्ग समाज में परिवर्तन बहुत देर बाद और धीरे–धीरे बिना पीड़ा के होता है और यह परिवर्तन सीधा तथा एकदम तीक्ष्ण संघर्षों से उपजता है। यह संघर्ष ही आदिमसाम्यवाद की प्रेरक है तथा उससे आगे आकर व्यक्तिगत सम्पत्ति में परिवर्तित हो जाता है। दरअसल कार्ल मार्क्स का मानना है कि आदिम साम्यवाद एक ऐसा समाज था जहॉ पर उत्पन्न उत्पादन के साधनों पर सबका सामूहिक अधिकार था। और उसके बाद उत्पादन अधिशेष पर कब्जे को लेकर वर्ग संघर्ष चला तथा नए–नए आयाम आते गए नया–नया समाज बनता गया।

उपरोक्त सभी आधारो पर स्पष्ट है कि भारत के समाज में अंग्रेजों के शासनकाल में जो इकलौता सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है वह है कि वह जनजातीय समाज से कृषि उत्पादन प्रणाली में तब्दील हो गया। जनजातीय या आदिम समाज हर स्थान पर दिखता है चाहे वह जाति व्यवस्था हो या ग्रामीण समूह, धर्म, कृषि सेवा, यहॉ तक कि सरकारी संस्थाओं में भी। हर वंश या राज में एक बात समान दिखती है कि कही–न–कहीं वह जनजातीय समाज से जुड़ा रहा है अथवा उसको पल्लवित और प्रोत्साहित करता रहा है। उदाहरण के लिए भारत में मध्यकाल की सबसे मजबूत ताकत मुगल भी कहीं–न–कहीं जनजातीय समाज के नेता चंगेज खॉ से जुड़े रहे हैं। इसी प्रकार वह तैमूर लंग से भी जुड़े रहे है। जनजातीय समाज में शक्तियां एक छोटे से समूह में

होती है तथा उसे समूह के व्यक्ति मिलकर निर्णय लेते है। न कि कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से निर्णय लता है। जैसे मुगल स्वयं को मुगल नहीं कहते तथा गोड सरदार स्वयं को गोड नहीं कहते है। यह तो सामान्य लोगों के लिए है जो मुगलकाल के लोगो का नामकरण कर लेते है। इसी प्रकार हम महाभारत में 'किन' समाज का टूटन पाते हैं। यानी जो प्रारंभ में एक जनजातीय समाज रहा और धीरे–धीरे साम्राज्य में बदल गया। मगध के बनने तक वहां भी इसी प्रकार का समाज रहा तथा मौर्य एक साम्राज्य बन गया। इस प्रकार साम्यवाद में लोगो के मध्य किसी वस्तु का विभाजन बराबर होता था लेकिन समाज में दुरूहता आने के बाद बह बदल गया। इस प्रकार अपादन अधिशेष पर कब्जा करके समाज में नए–नए वर्गो का उदय हो गया यह वर्ग समाज को हर तरह से प्रभावित करना चाहता था। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह ट्राइबल समाज इतना लंबा क्यों खिचा। वहीं यह लिक्विडेट हो गया यूरोप में जबकि 1 हजार सीई में वहां सामंतवाद का उदय हो गया था। इसके हम निम्नलिखित कारण पाते हैं पहला, भूमि की अत्यधिक उपलब्धता इसके प्रति जिम्मेदार है। और इस तकनीकी दक्षता में कमी ने ट्राइबल को कृषि अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को इंगित किया है। और शिकार करना घना जंगल का इस्तेमाल जारी रहा है। हमें काल विभाजन में जनजातीय समाज तथा इस समाज का मिश्रण देखना है। और यह भी दिखता है कि किस प्रकार इनका धीरे–धरे विकास होता है और किस प्रकार यह समाज नए सांचे में ढलता है और एक ऐसा परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है जहां राजा के धर्म के आधार पर परिवर्तन को इगित न किया जाए बल्कि वह परिवर्तन आर्थिक–सामाजिक आधार पर है। भारतीय इतिहास के काल विभाजन का यहा प्रश्न केवल अकादमिक महत्व नहीं रखता बल्कि पहचान के निर्माण और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भी कहा जा सकता है। कि इसका गहरा राजनीतिक महत्व है। राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने काल विभाजन में महाराणा प्रताप को अकबर के खिलाफ देशभक्ति का मानक माना तथा कुछ युग को स्वर्ण युग से जोड़ा। इस प्रकार यह हर्षवर्धन की मृत्यु से काल विभाजन को ज्यादा प्रासंगिक जानते है जो अंतिम हिन्दू सम्राट था क्योकि उसके पश्चात कहीं–न–कहीं भारत का राजनीतिक इतिहास सामंतों का इतिहास रहा है और शायद ही किसी राजा की सत्ता एक बड़े क्षेत्र में व्यापत रही है। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कोई बड़ा साम्राज्य नहीं दिखायी देता है और उसके कई वर्षो पश्चात महमूद सुलतान यानी तुर्क आते हैं और दिल्ली सल्तनत की स्थापना करते हैं। और अनेक अग्रेज इसे मध्यकाल की शुरूआत मानते है। वहीं राजदरबारी इतिहासकार भी कमोबेश धर्म एवं संस्कृति को अधिक महत्व देते दिखायी पड़ते हैं।

जब हम मार्क्सवादी विचारधारा पर गौर करते है तो पाते है कि उनका माना है कि भारत एक ऐसी अर्थव्यवस्था थी जिसमें अपने आप में विनिमय पर आधारित बहु ग्रामीण समुदाय की अर्थव्यवस्था थी। यहाँ तो परिवर्तन नहीं दिखायी पड़ते अथवा बहुत ही धीमे–धीमे दिखायी पड़ते है। इसलिए भारत का आधुनिक उपनिवेशी अर्थव्यवस्था द्वारा भेदन होता है डी.एन. बुकानन 'इस्पात की रेल ने भारत के गॉवों को भेद दिया।' [12] यानी मार्क्स का मानना है कि अंग्रेजी शासन के दौरान रेलों ने भारत के हर क्षेत्र की तंद्रा तोड़ दी तथा उसे मुख्य धारा में ला दिया। लेकिन मार्क्स की 10 एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन की ही बात करें तो स्पष्ट है कि एशियाई उत्पादन प्रणाली की विचारधारा पूरे एशिया को ध्यान में रखकर लागू की गई थी। सिर्फ भारत से जोड़कर इसकी प्रासंगिकता सिद्ध करना गलत है। पूरे एशिया की अर्थव्यवथा, समाज और संस्कृति अलग–अलग है अतः एशियई उत्पादन प्रणाली के आधार पर परिवर्तन को खोजना मिथ्या प्रतीत होता है। वर्तमान भारत के समकालीन इतिहासकारों में भी भारतीय इतिहास के काल विभाजन को लेकर अनेक विवाद दिखायी पड़ते है। मैसूर के एक ऐतिहासिक सम्मेलन में जब बड़े बड़े इतिहासकार हैदर अली और टीपू सुलतान पर अपने शोध पत्र पढ रहे थे कि उनकी विजय और रक्षा की नति क्या थी, वह हिन्दू भारत, मुस्लिम भारत और ब्रिटिश भारत के रूप में तथ्यों को प्रस्तुत कर रहे थे। इतिहासकार इन मुद्दों पर काफी बंटे हुए हैं तथा जमकर चर्चाओं को बाजार गर्म था। केवल उस समय में मामला कुछ ठंडा दिख रहा था जब सम्मेलन के अध्यक्ष मुख्य सेशन, अंतिम सेशन और अंतिम दिन अपना वक्तव्य दे रहे थे यह अध्यक्ष कालीकट विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय के.के.एन.कुरूप थे। उन्होने कहा कि इतिहासकारों को एक दूसरे पर आरोप लगाए बिना केवल तर्क के आधार पर लोकतांत्रिक तरीके से एक दूसरे की बात का विरोध करना चाहिए। पत्र प्रस्तुत करते हुए एस.के. जोशी के काल विभाजन को हिन्दू, मुस्लिम, ब्रिटिश भारत में बॉटा था। उनका मानना था कि हिन्दू काल का उदय और पतन चार महान साम्राज्यों मौर्य, राष्ट्रकूट, पाल और प्रतिहारों पर आधारित था। अतः मुस्लिम भारत की शुरूआत 1000 ए0डी0 से होती है तथा ब्रिटिश भारत के आरंभ तक व्याप्त रहती है।

12 डी.एच. बुकानन, एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा–12, लेखक विपिन चंद्रा, पृष्ठ – 197

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ट्राटमेन थॅमस आर0, आर्यन एंड ब्रिटिश इंण्डिया, थोड़ा प्रेस, पृष्ठ संख्या–117 आई.एस.बी. एन–81–902272–1–1.
2. मेरिट जॉन, द अदर एम्पायरः मेट्रोपोलिस, इण्डिया एण्ड प्रोंग्रेसइन कोलोनियल इमेजिनेशन, मेनचेस्टर यूनवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ–133, आई.एसबीएन. 978–0–7190–6018–2.
3. अमर्त्यसेन, द आर्ग्मनदेटिव इंडियन
4. डी.डी. कौशाम्बी, ऑन ऐ मार्क्सिस्ट एप्रोच टू इंडियन क्रोनोलोजी, इन कम्बाइंड मेथेड इन इंडोलोजी, एण्ड अदर राइटिंग (चट्टोपाध्याय), पेज–49–50, डी.ए. सुलेकिन, 'बेसिक क्योश्चन ऑफ द पीरियडज्ञइजेशन ऑफ द एनशिंएन्ट इंडियन हिस्ट्री, पेज–150.
5. कार्ल मार्क्स, ए कोट्रीब्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ पालिटिकल इकोनॉमी 1970 पृष्ठ–21
6. बी.डी.महाजन, भारत का इतिहास, पृष्ठ न.–79
7. जॉन एम फ्रिट्स, जार्ज माइकल, डी.वी. देवराय विजयनगर रिसर्च प्रोजेक्ट मोनोग्राफ।
8. डी.डी.कोशाम्बी द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ एनशिष्ट इंडिया इन हिस्टारिकल आउटलाइन, नई दिल्ली 1981, पृष्ठ 10
9. कार्ल मार्क्स सर्वे फ्राम एक्साइल(इ0डी0फर्न वेथ) पेग्विंन 1973 पृष्ठ– 302,306
10. डी.डी.कोशाम्बी द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ एनशिएण्ट इंडिया इन हिस्टारिकल आउटलाइन, लंदन, पृष्ठ 20
11. बी.डी. चट्टोपाध्याय, इंट्रोडक्शन टू डी.डी. कोशाम्बी, पृष्ठ– 28–29
12. डी.एच. बुकानन, एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा–12, लेखक विपिन चंद्रा, पृष्ठ – 197

LBP PUBLICATION